

॥४०॥३७।।

१

॥श्रीनमविजयग्रंथस्ति नालिमोद्यायप्रारंभः॥



"Joint Project of the Rajawade Sanskrutik Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pralishthan, Mumbai."

श्रीमहागणाधिपत्तेयनमः ॥ जयजयराघवकरणाकरा ॥ अवनिजाकुचमुष्ठणमणिहरा ॥ राघणानुजपत्तणा
 समरधिरा ॥ पुत्रपौत्राहितप्रिया ॥ ७ ॥ प्रतापसुर्यवंशाविवर्धना ॥ मयजामातकुचकानन्देना ॥ सद्वर्थदंदा
 रहवंश्यमोन्नना ॥ ओनंदसहवालिस्या ॥ ८ ॥ कौशलामाहस्यारविद्यमन्ना ॥ जिरतनयनपद्मिदवाक्षा ॥
 सुमिनालुलघाणाधाना ॥ अतिउद्वारजायोध्या ॥ ९ ॥ ब्रह्मानंदारघुनंदना ॥ वहीवंपुडंप्रयस्त्वना ॥
 दृशिलिकाजगन्मोहना ॥ तुचिवोल्लेययर्यो ॥ १० ॥ अिकेवेन्नावधाना ॥ छतिसोवेजाधाईजाय ॥ ११ ॥ श्रीराम
 जापिराङ्गरहुनंदना ॥ राज्ञाल्लानवेसला ॥ १२ ॥ इकाशसहस्रवंडे ॥ निर्विच्छराज्यपुराणपुत्तवें ॥ जयोध्ये ॥ १३ ॥
 चक्कलेसतावे ॥ विश्वसकुचकोहले ॥ १४ ॥ विद्वेन जनहनि ॥ जगन्माताप्रणवरपिणी ॥ नेजयोध्यापतित्वि
 राणि ॥ इतिगर्भिणिपठिन्माने ॥ १५ ॥ रास्त्रसंख्यामासभरतांजाणि ॥ वोटिभरणकरिरघुनंदन ॥ तेसोहु
 कावणितांपुर्ण ॥ १६ ॥ जगेवहनरोषाचें ॥ १७ ॥ कसंतकाठिकिझविपिनात ॥ राघवप्रवेशलारितेसहित ॥ अल्ये
 तवनशोसिवंत ॥ नंदनवनरुनिजागके ॥ १८ ॥ वृश्वसदाकुचकाणिसदन ॥ माजिनहिसेसुर्यविर्ण ॥ १९ ॥

तेष्यंशिलेच्चजांगोक्तिधरनं ॥ राजिवनयनविक्रसतजस्ये ॥ १० ॥ नानाहसांभाष्यामाजाति ॥ शिलेशिदनि
 त्रिभुवनपति ॥ येकांतदेवोनिश्चितेप्रति ॥ पुस्ततप्रितिनेराघव ॥ ११ ॥ अणेसकुमारेजानहवाक्षे ॥ तुजेगे
 तातिकायोहवे ॥ मनातआवउत्तेयेवेक्षे ॥ सागसर्वाहिपुरविना ॥ १२ ॥ मगीकृचित्तहास्यकृतव ॥ ननीकि
 रेनाप्रतिवचन ॥ अणेवेहजावउरचुबहव ॥ नतरेणान्वपदार्थे ॥ १३ ॥ राजिववाहस्त्रणोलाजन्सोङ्गनि
 ओहवेसंगलकायमनिहुनि ॥ जेजेनपाविलेप्रदाने ॥ पुरविनजापराजसे ॥ १४ ॥ जनकजावेलेवाहपरि ॥
 अणजाहुकुमरिचेतिर ॥ पवित्रसाधिपत्न्यामाज्ञा ॥ नाकिराहवे ॥ १५ ॥ धातुनिन्नांत्रणात्तन ॥ करवेसु
 मिविरित्तायन ॥ कंहसुकेनहुन ॥ शुनिशुलभ्य ॥ १६ ॥ नवातअणेरचुबहव ॥ पुर्ववनवास्मभेणिवेदास
 य ॥ जासुनिनधायेचिमन ॥ जावउकाननईयेत ॥ १७ ॥ पुठिलभविष्यार्थजाणेन ॥ अवदास्त्रणेरचुबहु
 ना ॥ तुम्हिमनकामनाकरिनपुण ॥ सत्यजापसकुमारे ॥ १८ ॥ यत्परियेकदारचुविर ॥ पुरिरस्त्रवजेयुसहुन ॥
 त्वांसवद्वांलिसवैष्वर ॥ पुस्ततजालागुत्समाव ॥ १९ ॥ तुम्हिमनगर्विहित्तांनिरंतरा ॥ जाकणिताजनवातास्मन्त्र ॥

(3)

श्रीराम॥ १२॥

लरितेंसंगवेंसविस्तर। लोककायसणिभासा॥ २०॥ वंदीतीहिंवनिर्दित। येवाकुंवाजपेवास्थापित॥
 अस्यजमेनुसाप्रति॥ सागनिष्ठीतिकायतें॥ २१॥ हेवनणितिवगरांत॥ राघवाहुसेसर्वमका॥ सकृदलोक
 पुण्यवंत। येवावर्णितसर्वदां॥ २२॥ परिरजकयेवानिदुर्जब। तेषोस्वस्त्रिसकेलताड्य॥ त्वारोगस्त्रिसो
 वा॥ पित्रसहबाप्रतिगेति॥ २३॥ मोहरंहेलिबहुत्तर्त्तर्त्॥ मगपित्यानेऽप्तिधरन॥ जामातमहाप्रतिनेत्रना॥ २४॥ विजय॥
 घातीचलजाहुला॥ २५॥ तवतोसजकक्रोधायः॥ ना॥ चरुराप्रालिवोलवचन॥ अष्टेऽसमाजेसहन॥ प्रवद्यो
 नेहिंलत्तता॥ २६॥ मितेंरामनकेनिर्धारि॥ रावये॥ तेषोमायस्त्रिजंतुमि॥ घण्मासनेतिअसुराप्रहिं॥ तेषोमा
 घारिजाणिति॥ २७॥ ओहिनिरजन्मुख्यसाचार॥ जगचेताकाहाड्यार॥ ओमुचेयातिलनिर्धार॥ विप
 रिलभेसेस्त्योसेना॥ २८॥ हेमनुचितचूलेनघुकाय॥ आयुतिवाहीवरशोलेतें॥ तेसामिलंपटयेये॥ वर्द्धर्जिचेन
 प्राहेचि॥ २९॥ औसाचांडक्तोरजद्वा॥ बोलिलालाभनिक्कक्क॥ औसेंओकताचिरघुनायक॥ परमसंतसपे
 जाला॥ ३०॥ पत्तारनिलहुमण॥ सांगेसक्कवर्तमान॥ अणेहेरजहेनिहिलेनजलायुन॥ जानकितागिनसेमित्र॥ ३१॥

दशमुखबाटु निसह कुकिं। सुवेदो दिजनिलिजनकवाक्षि॥ विष्विपुरं धस्त्रं द्वौक्षिग्नि। देवमंडकिसर्वहोति॥ ३७॥
 सक्षको हेत्वतां तेवेदो॥ जानकिनोहिव्याहिघर्ले॥ जास्तु नरजहलं उनवोले॥ मजनसो सवेसर्वया॥ इति संसारम्
 येत्वता॥ योगीयक्षिजोशममता॥ लैशिच्छामद्यग्निनातिता॥ सुमित्रासुवास्तलेहो॥ ३८॥ तनु द्यग्निडोसाम्राण॥
 क्रोपत्यग्निरपुच्चारमण॥ किंसंसारसंक्षेपेष्यधव॥ यग्निनेवास्ताहेपेण॥ इत्थाकिंहिंसकाहस्यासंगित्पुर्ण॥ किंमो
 नित्यग्निवाचाजाण॥ किंस्तु नष्मनालुन॥ परिवद्यग्निको॥ श्रोत्रित्यग्निदुराच्चार॥ लैहिशितात्यग्नि
 नसाच्चार॥ यावरि सुमित्राकुमर्या क्रायबोलघाजा बाल दृष्ट्या॥ पाषांडिम्लेघदुर्भाति॥ सहोनिंहितेवेद्युति॥
 परिपेडितक्रायत्यग्निति॥ जनकजापतिसांगोहेपुण्॥ दुर्लभनिंहितिवाक्ष्य॥ परित्यग्नितिक्रायराजहिस्य॥
 हर्दुरनिंहितिज्ञमरास्य॥ परित्योद्धमकणित्यग्निना॥ इत्यानिद्वक्तनिंहितिसंवांस॥ परिविवेदिपुजिरात्रहि
 वस्य॥ तस्फरनिंहितिर्दुस्य॥ परिचक्षोरतेविटेन॥ ३९॥ याकारणं जनकजामता॥ सहस्रानत्याग्निजनक
 वस्य॥ तस्फरनिंहितिर्दुस्य॥ परिचक्षोरतेविटेन॥ ४०॥ श्रीराममृषणतनिविदोषा॥ लोकीनिंहितनिरात्रहित्यस्य॥
 हुहिता॥ व्यानजक्राचित्वता॥ जिकुआतां घोरेहिन॥ ४१॥ श्रीराममृषणतनिविदोषा॥ लोकीनिंहितनिरात्रहित्यस्य॥

५

॥त्रिराम॥ लण्ठितोऽनेंरजकास॥ अंगिदोषलपोनियो॥४८॥ आतांसैमित्राकेचिजाणा॥ विलादंकिवनिनेभव॥ नाहितरि
॥३॥ मिभापुलाम्राणा॥ त्यगिनजातांनिश्वये॥४९॥ ऐसेवोलतानिर्वाणा॥ ताकाक्षउविलालसुमणा॥ ब्रह्ममुहुर्लिखद
ने॥ जानकिचेंश्वेशला॥४३॥ परमविकृक्षुउभा॥ इताज्ञालेचेवंदिवरणा॥ स्नणोपाहावयातापसारण्य॥ जाज्ञा
हिधलिराघवं॥४०॥ ऐसेंजैकतांचिश्ववाज्ञा॥ रुषलीवदहराउबांदिना॥ नयोडाहकेपुरविनचापयाणि॥ मागेम
जबोलिते॥४५॥ साचकरावयात्यावचना॥ तुलासपाठीवंलसुमणा॥ तरिपञ्चरात्रिक्षमोनिजाणा॥ सखरये॥ विजया॥
उमाघटे॥४६॥ ऐसेंसैमित्रेंजैकतांकर्णि॥ असुर् तिननिहुना॥ मनिस्त्रणजातांपरतोनि॥ वैचेययणमात् ॥३॥
ल्पे॥४७॥ असोजानकिरुषयुक्त॥ कस्त्रासरणवन् ॥ सैमायद्रव्यंसवेद्येता॥ लपिङ्गनपुजावया॥४८॥
मंगलमग्निसोमान्यसरिता॥ रथिवैसलिहाणकलगतो॥ लह्मणेरथशांकुनितत्वता॥ शुरोद्दोजापणवेसज्जा॥४९॥
क्रोणास्वार्तांगद्वक्तव्ये॥ जान्हविलिमिंबणिलारथ॥ तोंजपशुकुनतेकाबहुतु॥ जगन्मातेसजापार्वति॥५०॥
जाउवेतरगमानाधवर्ति॥ यतिवयोगपिगकेवहति॥ वायस्वामज्ञागेज्ञाति॥ शोकसांगतिलस्यता॥५१॥

अेसाजपशकुनहेखतो। मनिदच्चेजनकादुहेत। हेवराप्रतिपुसेतलता। चिकेंविपरिनकंहिसति॥५२॥ तव
 तोमुधरजवतार। सहसावेहिप्रत्योतर। नयनिवाहातसेनिर। कंउसहदजाहाल॥५३॥ शिलामणेवंधुस
 मेत। सुरवरप्रभसोजनकजामत। द्यन्तिभूमद्यसमस्त। तेमजवरिपडेष्ठो॥५४॥ मगमणेदेवरामुर्मति॥
 विलेकुनवनजगिरिय। सत्तरजाउजगाईप्रतीत। रथुपर्तिहापाहावया॥५५॥ परितोनवेलेचौसर्व
 या। तेटस्पाहेनधुविक्तोता। पुढेकौकमदिजनहुत।॥५६॥ सुरनदिउतरोनतेव
 छिं। सत्तरपैललिवाग्निनीन। मानुतिरथनुमंडि। पवारवेगवालवेल॥५७॥ परेमयानकङ्कानन। नाहि
 मनुष्याचहर्शन। निकल्पव्याघ्रपुण। वस्त्रव्यन्ति तेस्थिक॥५८॥ शिलामणेहेउभिकापति॥ कोणिकं
 उर्णाहुलिहेजगिरिय। कांयेधेत्तपिआथमनहिजात। जेतांनिन्यितिमजकोठ॥५९॥ विप्रवेदघाषकरितव
 नि। कालयापनावकाश्वरण। वोंकारवषकारव्यनि। यागसदनिनीहिसति॥६०॥ तोंगहनवनिनेउनिर
 थ। सौमित्रनुपरोजकारन। जानकिउतरोनवरित। वेसविलित्येगर्ज॥६१॥ तेमुगजिचेहिवरल॥ वनि

(5)

शीराम ॥ तत्त्वक्रोलमुरव्यमंडण ॥ किंतेलावप्यसुमिच्छेनिधान ॥ वनिलहुमपयाकित ॥ धृता ॥ किंसौदर्यनभिचेनहत्रा ॥ किंत्रिषु
 ॥ ४ ॥ वनपतिच्छपापात्र ॥ अंगित्यातेजेभपार ॥ वनतेकांरजक्षेले ॥ धृता ॥ चंद्रिंबसेसदांकर्कक ॥ त्यहुनिषुद्दरजाव
 चिंचेमुरव ॥ चपद्गुनिभाघिक्ष ॥ जेव्वकारसव्वक्षिलाधृता ॥ असोन्नुणदोलासर्तिहावसउन ॥ सैमित्रकरिसाहंग
 नमन ॥ रवाललेवहनक्षत्रन ॥ मुंहलउभागक्षवा ॥ ५ ॥ प्रहृष्णाकरतविलह्यण ॥ पुढीनिधीरइठन्चरण ॥ देवरा गविजय ॥
 चेमुमलवदन ॥ लटस्तपाहुजानिक्ष ॥ धृता ॥ वैमित्रनभाजगमाति ॥ तुजवनिसोउवित्तेरधुनाधें ॥ त्यचिजाजा ॥ ६ ॥
 जेलोटनाते ॥ घेरनिजालेमुणेनियां ॥ धृण ॥ रजातनि हलेलुणोनी ॥ तुजसोउलघोनवानि ॥ जासोनधुपतिचे
 चरणमनि ॥ जाटविहराहुसुनवे ॥ धृता ॥ कमच्छणि ॥ ७ ॥ तुहुता ॥ तिजवरीविजापेउक्षमाता ॥ मगपाञ्चिणीचान
 उरेजात ॥ तेद्विमुद्धितपेउशता ॥ धृता ॥ तहनकरितसामित्रा ॥ रथालवजालस्त्वरा ॥ तेषुनिपरततत्तुभिकावरा
 कीठणमनकरोनियां ॥ ८ ॥ वनदेव्वावह्यापाण ॥ वारणउरगपचानन ॥ तयोरिविनविलहुमण ॥ जानकिजल
 नकराहो ॥ ९ ॥ प्राचिजापतेजसमिरा ॥ जवधिजलनकरोहस्तकुमार ॥ असोपवनवेगेसैमित्र ॥ जहोध्वापुरपाषता ॥ १० ॥

इक्तेसुचासावत्तना। उच्छुवपाहेपअनयन।। तेऽहुरगोलालसुमण।। उभिरक्रोनहक्रोड।। ७३।। बाहेउमालगत्तत्व
 ता।। हृषेष्टप्रतवेगेसुमित्रासुला।। माज्जाज्जन्यायलोकोपता।। क्राहेजातावकुनिमज्ज।। ७४।। माज्जावधत्तिक
 रनि।। सोंगद्युपतिसजाडनि।। मियेक्तेहुर्वेच्छविनि।। क्राणिक्रात्तजात्तजात्त।। ७५।। हृषेष्टावधीवरधुनया।। हृषेष्टा
 निहाक्रामरिजगन्नाता।। वविष्वापेद्वहस्तना।। ल्यांगवर्हाट्टल।। ७६।। धरथरांकापेमेदनि।। पर्वतपाक्षिरउ^{ashvagha}
 तिवनि।। गजब्याप्रामुर्धायेदनि।। दुःखेक्तविपत्ति।। अहुंसमुक्तहात्तवकुनि।। दिनादेखतिरउत्तवनि।।
 नुत्यक्रक्रविसरेनि।। शित्तिक्तिक्रक्ररित्तति।। ७७।। पदेत्तवेक्ति।। शित्तेवरिक्ररित्तसात्तिल।। जक्कंतुसर
 निसक्किल।। शित्तेवरिशित्तिति।। ७८।। वनगर्द्दिपुष्टुक्तान।। तेवेवरिघातितिपवन।। वनदेवताक्ररित्तित्तहन।। शि
 तादेवदेखेनिया।। ७९।। वनचरेक्तलव्वलिलिक्रावत्तिर।। तत्त्वक्ररित्तिद्वेस्त्वरे।। वैरजाविसरलिनेआवसरि।। शो
 हेक्तनिजाजीवन्या।। ८०।। अयोध्यापुरासत्तसुमण।। पावतातेक्तम्लानवदन।। तेऽगुणसिंहुरधुनेहन।। येक्तेलस
 दीनवैसलास्ये।। ८१।। तेऽउन्मिक्रावरेयेडनि।। माक्तेविलारभवरणि।। क्रन्णाणाणीवेशिलाभावठनि।। असुनयनिजाणिले
 ॥८३॥

६

अमरामा।
॥५॥

सोमिक्षलपोरचुराया॥ स्वस्मवतहेसंसारभाया॥ चिक्रिंच्यावृक्षचिद्माया॥ लटकिजौशिशुक्लिंदुनि॥ १४॥ नावरे
 अत्यंतशोकसागर॥ परिकल्पोङ्कवजालसधुविर॥ अत्तमनकृतनिसमय॥ मौव्येंवृत्तनैस्तत॥ १५॥ असेइङ्कुडे
 जानकजंदिनि॥ निधालिचालतदुःखवदनि॥ सुर्धाद्युत्तिष्ठपाक्षणि॥ उवनिवरिपउत्तस॥ १६॥ मायुलिउठेहात
 रेहुनि॥ रदनकरिधायामेक्कुडुनि॥ शिणोकेणाडाङ्गानि॥ रहुआताराघवद्र॥ १७॥ मिजनाथजत्यंतदिन॥ विजय॥
 जाविमिजातायेहेतुप्राण॥ तरिखात्महस्यकपुण॥ उलेगलहेलापेल॥ १८॥ केक्कपांतुनघेवुचुकील॥ १९॥
 रणियहुटिवनिपउलि॥ किजिवनेविषमानदिन॥ नवमिजैजीकां॥ २०॥ नैषघरायचिराण॥ पुर्वपउलिवेह
 रवनि॥ किंभिन्निच्यावेशंभवनि॥ येकटक्कानिते विहुड॥ २१॥ येकमार्गनदिसेयेथं॥ सबजपसबवनिहु
 उत॥ हिर्धस्वरेनहनकरित॥ तेनिवत्येकवत्तलं॥ २२॥ तेक्कहसुकेंच्यावयाशि॥ वनाजातेवलिक्कभाषि॥ चिक्र
 क्षज्ञानलेजोराति॥ २३॥ अत्याचालपविशिमानाहि॥ २४॥ अवताराजाधिजनपत्र॥ जेणेरामकथाकेलिविचित॥
 तेणोजगन्नातेचाज्ञाक्षस्वर॥ क्षणिभेक्किलहिंतस॥ २५॥ दितादेखलांदुरनि॥ जवक्येतवप्लिक्करुनि॥ २६॥

हरणेभासुचितपस्विवनि ॥ प्रथटीलकावयेषोत्तेषं ॥ १४ ॥ हरणेकोणहुमुक्तज्ञाणि ॥ किमुक्तप्रधलिप्रणवद्युपि ॥
 किमुक्तप्रवाज्ञाणि ॥ दर्शनवाववाप्रथटलि ॥ १५ ॥ मगल्लणेजवक्त्वेउन ॥ सांगमालेतुंजाहसेकोण ॥
 कांडोविलेंघोरकानन ॥ कोणेंदुःखदिघले ॥ १६ ॥ मगल्लेत्रिसुवन्माता ॥ मिमिथुक्त्वन्मिजाहुदुक्तिता ॥ राव
 णांतक्त्विभाहुकांता ॥ सैमित्रेजातांस्यतिलेंवनि ॥ १७ ॥ नव्यावगसतांकिंत्तिता ॥ टाक्तिलेंघोरजरंण्याता ॥ परदे
 त्रिभाहुजनाथ ॥ लरिमाजातातेक्तवक्त्वें ॥ १८ ॥ मगल्लपावेजननि ॥ माझेनाववालक्तमुनि ॥ अयोध्याना
 द्यक्त्वाहुपाणि ॥ मूजबरवेजाणतजसे ॥ १९ ॥ ह्योन् ग्रामक्तिरंतरा ॥ मजजाणतजसेमिथुक्त्वर ॥ तुझपि
 लजामुच्चामेत्र ॥ केन्यसान्वारतुमाजि ॥ २० ॥ दुजहातलहानपुत्रा ॥ पिताहुनयनक्तिमिथोर ॥ तुजजेषेघातलेवा
 हुर ॥ तास्वास्मुक्त्वेतिता ॥ २१ ॥ मगजावकिंत्रिहत्तिथत्ता ॥ तालीजात्रमविद्येउन ॥ तोंसोवलेमकोल्लविजन ॥ का
 यवदेनवेलित्ता ॥ २२ ॥ हरणात्तहेकोषजाहतान ॥ यत्तहरणेजानक्तिजगम्भाता ॥ नपिलणतितवता ॥ जनर्थवरावि
 अपिणित्ता ॥ २३ ॥ जसंतसोक्तेज्ञानण ॥ टाक्तुगलोक्तिक्तुटिक्तजन ॥ वसविलेंघोरकानन ॥ येदेहेविद्धजाणिलेकं ॥ २४ ॥

(X)

॥श्रीराम॥

॥८॥

ईचेसुदरपणबल्यंत। इजवोरजपनादभालेवहुता। ईच्चापर्विजात्वाग्रिशादात। होउपोहेयेरवादा॥८॥ येकल्पणलिंगिता।
 सति॥ जोरेहेजसेलनिर्भीतिं। नरियेधेवकुनिमगिरयि॥ अक्षम्भातजाणिलहे॥ छानेंजरिनकेरचेजि॥ तरिहव
 उवियेचक्षणि॥ ऐसेंजेहतांजनकनदिनि॥ भगिरथितिवाहाता॥ षा। त्वेषसागरकुकलारकमाय॥ हीरचरणेल्लव
 जोजुतनये॥ ब्रह्मवरहफोडुनिस्थये॥ प्रवटहेशिट्ठला॥ कम्भोजवहुतकावर॥ शिवृह्नादिसक्खसुरवर॥ ॥विजय॥
 सत्यतिषिमुरव्यसनकमार॥ निरंतरलुजस्तिति॥ भनुमतस्पद्वितीनिर॥ भस्महोतिपापेंभपर॥ मुम्रसु
 मनाचहिवहार॥ शिवमुगुरितेविहिर्सालिमधु॥ हेतुर्जिसाचार॥ येकलसेमरलासागर॥ तरिमजकार
 णेवेगवन्ते॥ जबनियेधांवयेपंथो॥ षा॥ तोयामांहु-नपवत॥ ऐसालोटजालजहुत॥ नीषिजालेमयमित॥
 पठतिजात्ममठकुनियो॥ १२॥ येकशिलेशिक्करितिनमन॥ मालेआत्मजातिबुडोन॥ जोलासरक्षावयालुजीवण॥
 कोणियेधेंदिसेबा॥ १३॥ मगलिणेप्रार्थुनिवेवकां॥ वोयनिक्षकचालविल॥ सत्यस्तिजनकबाका॥ नविगर्जलि
 सर्वहि॥ १४॥ सहकर्ताषिमिकोन॥ कीरतिजानीकिवेस्तवन॥ लप्तिनायेतुजछकुन॥ जवीकजाणिलभगिरयि॥ १५॥

॥९॥

असोवालि कें आपुल्ला आमनाता ॥ जीकिठेविलौ पैयस ॥ रथि चं सर्वये कमत ॥ मातब्य पुत्रान्न कुटेना ॥ १६५ ॥ नवमा
 समरतं चिमुण ॥ तुमनदम त्रुत्तम हिन ॥ माध्याक्षाला लाचं डिर्ण ॥ तों प्रसुतजालिजानिक्ष ॥ १७६ ॥ दृष्ट्यन्न विस्त्रिया
 धां दोग्नि ॥ उवक्त जाल्मा लये स्थाणि ॥ तोदोध्ये पुने दीविलेनवनि ॥ शशितरणिजया परि ॥ १८७ ॥ प्रथमतोउपजेतोधकु
 य केवव्या मायुक्त उपजेतोवीडल ॥ असोदोध्युपडोलवाळ ॥ जावकेजावकेलये स्थाणि ॥ १९८ ॥ वालि क्रगलाहितान्ना
 नारीशि ॥ द्विष्ट्यधां वाजिगेलेसामाचि ॥ लातारोये प्रजाना किति ॥ जाले महणेनिसंग्गिततेला ॥ २०९ ॥ औसें नैकतांचि
 व चवा ॥ येदं कुशलहुता लिंघेउन ॥ उपनिक्षिलवक्त उत्तवा ॥ लेवियानवान्वरिति गवा ॥ कुशावरभिषेकिलवाळ ॥
 लाशिनावठविलें कुशाविमेका ॥ भाक्षर्ण नेत्रधनिका ॥ नात नैवकरामाचि ॥ २२० ॥ लेकावरिनिजउनि ॥ धाक्षुरज
 मेषेकिलालस्थाणि ॥ साशिलहुगाविउनि ॥ व्योहुक्षाकिलावालि कें ॥ २२१ ॥ तुष्ट्यपहिवाउचंड ॥ किं पकोपक्वाढ
 हिवाक्षर ॥ नदोधेराधविविरा ॥ मैसेवाडोलागले ॥ २२२ ॥ दोर्धं चिलालनापाकण ॥ वालि क्रगर अचुहिन ॥ तथि
 बाक्कांतहोद्येजण ॥ क्रिताक्रितीनिस्तरा ॥ २२३ ॥ सप्तसंवच्छरहोतांपुण ॥ वालि कैत्तुरबाणुना ॥ आरामिक्तुर्जि

अतिरात् ॥ १५॥

बंधन॥ मेकानसाधि बहुत्॥ २४॥ च्यारादिवसपरियंत्॥ जो जो एहि जो पदार्थ॥ सर्वाहुकामधेनुपुरवित्॥ जो ले
 कृत्सभवधेनाधि॥ २५॥ बाक्षेसुहरदेवोन्॥ बहुत्साधि हेतिकरदान्॥ वालिकेवेदाध्ययन्॥ हो धांकडुनद्वरविलें॥ २६॥
 उआङ्गास्त्रीश्विणजोल्॥ सक्षक्षुराणकरतकासक्षं॥ सगरामचरित्रपढीलें॥ इतकेटियंथजो॥ २७॥ बाक्षंस्त्री
 नवेकुवत्॥ अधिकाधिकलक्षफुटत्॥ मगमन्त्रहास्त्र समस्ता॥ वालिकमुनिसंगेतयां॥ २८॥ मगभ्रुवेदपठउ ॥ विजया॥
 न॥ हालिदेलधनुष्यबाण॥ युध्यगतिसांगेपुण्॥ हो येजप वरितिहो॥ २९॥ असोतलुदृशविद्याचास्पष्टिक्षका॥ २९॥
 वालिकरिकाविदोधांबाक्षं॥ नविपुत्राचविनेनक्षा॥ उग्नद्वाचहि डलिग्॥ ३०॥ नानाकोतुकगाएवोलोन॥
 रंजीविलजानकिचेमन॥ बहुत्सुकेजाणुन॥ मालेपुर्येति॥ ३१॥ सत्संगहोतांचिदेत्वा॥ प्राणिविस्तरस्यसार
 दुख्वा॥ लैजोजानहिविसरेसक्षित्र॥ स्वेदमणिलताचनिग्रह॥ दृशवर्षहोलांपुण्॥ मुग्धेशिजालिदोधेजपण॥
 नानाश्वापहेमासन॥ जो णिलिवोदुनिहाववया॥ ३२॥ येहेदिवशिवनिहिंत॥ लोपर्वतमस्तकिच्छानस्ताये
 क्षश्विणितपक्षिरत॥ वालिकाचावंचुता॥ ३३॥ तोमगवदाधतनिपुण्॥ कुञ्जोविधितारकुनिकापा॥ ३४॥ ४३॥

दत्त्वा तत्कार्गोलाधाणा ॥ त्रेतवोदुनिदोषेनोति ॥ ३७ ॥ वाल्मीकिपुसेऽवर्घयेउना ॥ कायतेभाणित्वोदुन् ॥ येष्वन्धनति
 मगवधुना ॥ अणिलातुम्बाकारणे ॥ ३८ ॥ ज्ञातांयचेचं चर्मकादुना ॥ दुम्बाकारणे कर्त्तव्यासना ॥ वाल्मीकियानुविलोकुना ॥
 तवतो बैधुपीडियेला ॥ ३९ ॥ वाल्मीकिलणे दोषेजणा ॥ अनिवारजोल्पुणा ॥ ज्ञामहत्त्वाहत्तवा ॥ केसेभालोवनानुरिं ॥ ४० ॥
 वंशुन्ततस्त्वंसकृदिक्क ॥ विष्वद्युक्तकर्त्तव्याकिं ॥ ज्ञानकिपाणिताकिंक ॥ वत्तेमानन्दंगितलेण ॥ ४१ ॥ तवतो वो
 लेहासोना ॥ तानासुर्यवंशाभानितिष्या ॥ यवरिमकल्प छात्रविष्णु ॥ दुष्मिचकेलेवाक्यपि ॥ ४२ ॥ परमाधिद्वेष
 गिवारा ॥ दुम्बचादुम्बान्मकर्त्तव्याद ॥ ज्ञालांयच्याद ॥ रिहारोक्तावाजिसर्वथा ॥ ४३ ॥ तेंवस्त्विदुवोलेवन्नना ॥
 श्रव्यन्त्वंसहस्रबाधुना ॥ ज्ञावेद्वार्तावात्तदायमा ॥ ४४ ॥ तेऽदोषेबोलतिलेवेका ॥ ताता
 कोरेआहेतज्ज्ञामकं ॥ तेसांगायेचवेका ॥ द्युर्गानियेनादोषीडि ॥ ४५ ॥ मगवोलेमुनेश्वना ॥ अयोध्यसमिपव्रश्य
 सनोवरा ॥ परिलेकमकेंपुअपारा ॥ दिशितिविन्नमाचे ॥ ४६ ॥ तेब्रह्मकमकेनेउना ॥ राघवकरिलोशिवाचिना ॥ माहा
 वक्तिवरद्वितिपुर्णा ॥ दत्त्वादिनभोवतो ॥ ४७ ॥ गदगदांहंस्तिदोषेजणा ॥ क्रमकेंआणुनलगत्ताक्षणा ॥ तीर्तुम्बवे

१९

श्रीरामा।

१८।

हिष्पुर्णा॥ निष्पयजैसेंजापिजो॥ ४७॥ तेवेद्यत्वांतभस्त्रवस्त्रणा। त्यासीहितिसालाउंपुर्णा॥ जरिस्वयेंबालारचुनंदना॥
 त्यस्यहितनबाषुयेथों॥ ४८॥ अनुष्मासलाउनिबाष्मा॥ चपकचालिलेदोवेजणा॥ जैसेसिंकहिस्तिलाहाना॥ परि
 त्रतापबलिविशेष॥ ४९॥ किञ्चादिसुर्येलाहानहिस्तिपरीस्वप्रकावेठज्येहिति॥ लाहानचिह्नेविप्रभगस्ति॥
 पूरिसरिलापलिप्राहिल॥ ५०॥ तेसेतेधाकुटेदिर। वेगेपावतेब्रह्मसरोवरा। कुरोंप्रेवेशोनिसमय॥ कमकेंतेकुंसो॥ विजय॥
 डिलि॥ ५१॥ तवतेविरवरवाळते॥ लहुवंशत्रवायवरि॥ डिवां॥ रक्षकबहुतप्रेतेकेले॥ उरलेपकालेजयोधे ॥ ५२॥
 द्वि॥ ५३॥ रामादिसांगलिवर्तमाना॥ नाषिबाक्षार् नाम जपा॥ हितिस्वक्षयुध्यतना॥ कमकेंघेउनिगेलेपे॥ ५४॥
 वृष्टिर्थकारिस्वयुपलि॥ केकडिवाक्षंचिद्रात्मि॥ नसा रक्षदोवेनिधति॥ कमकेंघेउनिलेरने॥ ५५॥ वालिका
 पुढेकमकेठेविति॥ नाषिबास्त्रिर्थकरित्विति॥ तरस्तपाहाशतासति॥ जगाधकर्तव्यबाक्षंचे॥ ५६॥ मगनुतन
 शिवलिंगनिर्मुवा॥ सहस्रकमीक्षकेलेपुजना॥ ब्रह्महुलेच्छेपुर्णा॥ निवसुनिगेलेतेधवो॥ ५७॥ येकेहिविशांदोवे
 डण॥ उरितजौंजानकिचेचरण॥ लवलोकुवाविरवचन॥ बालनाजालातकाक्षि॥ ५८॥ अमितजन्मकोकोणहेति॥

१०४

कोणग्रामिकोणवेहिं॥ जामुनापितानिश्चयेहिं॥ सांगकोणलोभाहातें॥ ५९॥ विलाप्तेजयोध्यानगरा॥ सुर्यवो
 दिंजजराजपुत्रा दद्वारयनोवेनपवरा॥ प्रचंडप्रतापजयात्मा॥ ६०॥ त्यचेवामलव्यष्टिनरथा॥ वेयाशनुचिरवा
 ता॥ त्यांतरावणालक्ष्मीपवताजागिजे॥ ६१॥ रजेकविंहितेम्भानी॥ मजसोडविलंघारवनि॥
 लेकाजगमालेचेनयनि॥ भञ्जुओलेबोलवो॥ ६२॥ वर्णगानजोकोनिसमस्ता॥ दोषेन्द्रिजालेपरमस्तसा॥ म
 गश्चित्तेचेत्यसाधानबहुता॥ करिलेजालेतेकाक्षि॥ दाहषवेष्पर्यता॥ अवघंणपडलेजयोध्येता॥ सलि
 कोमलिअकुता॥ लह्मस्तस्तगेलिए॥ ६३॥ जैसुचरकांतारा॥ लेसुक्कुहिणजयोध्यानगरा॥
 घनवेष्पर्यजपुत्रात्रा॥ गर्डिविप्रगर्जिज्ञले॥ ६४॥ दरस्तादासुन्नरस्तुनहना॥ कानुपडलेजवर्षण॥ यनस्तणल
 पनयेविणा॥ सत्त्विवाहरघातलि॥ ६५॥ जावहिजेसत्त्विवला॥ सककपतिवतांतमंडण॥ लह्मस्तिगेलान
 योना॥ तविचउजवघणपटियेलें॥ ६६॥ तरिजस्त्वमेघमाहायज्ञा॥ राघवाक्षरावास्तंपुणी॥ योडपाहोनिद्वा
 मकरा॥ प्राच्यवरिसोडावा॥ ६७॥ मगवारयुतिरियेकयोजन॥ मंडपघातलविस्तिर्ण॥ दुतपावउनसंपुण॥

१३

१४॥

अश्राम॥

मुबेष्वरमेष्विले ॥ ७९ ॥ विभिषणसुष्ठिवासा ॥ वोताउंयाठीविराघवेश ॥ तोहंकासहितजयोध्येस ॥ येतेजालेते
वेका ॥ ८० ॥ नर्चनिरुजंगदजांबुवल ॥ इरभगवस्विवकाहुता ॥ वान्नरपालेल्समस्ता ॥ अदेह्वापद्मेष्पै ॥ ८१ ॥ स्व
सामयिकेलियुर्ण ॥ मगविश्वाणिरसुनंदन ॥ अश्वारुद्गुनिश्वामकण ॥ निविलापुर्णसुलद्वाणि ॥ ८२ ॥ सु
वर्णपत्रिकालेवेकिं ॥ बांधिलिश्वामकणचेष्टिकिं ॥ वाराहस्तविरीलीहिल्लाविकि ॥ अेकाश्रोतसकृकहा ॥ ८३ ॥ ॥ विलम ॥
अयोध्यापसुहशरथवंहन ॥ रावणांतकवंधनेचन ॥ सकृष्टश्वरविसुष्टण ॥ शामकणसोडिलातण ॥ ८४ ॥ १५॥
जोकेणिजसतवकिवंता ॥ नेषेषोउडाधनवायवाध ॥ शाउडापद्मेहठासहित ॥ इत्तुञ्जनरवतपारिहि ॥ ८५ ॥
घोडापुजुनिरजिवनेत्र ॥ मस्तकिबांधिलेहिप ॥ तुष्टकरणिनमस्त्वार ॥ हक्कभारेदिनिधाला ॥ ८६ ॥
त्रात्तुञ्जारिस्मणेदसुनंदन ॥ सोकावेदिवहियावप्रतोव ॥ सकृवपेष्विडिकोन ॥ नपसांगालेभाणिजो ॥ ८७ ॥
मगसुवर्णप्रतिमासुहर ॥ ड्यावकिचिनिर्मिलियविकर ॥ मगतेप्रतिमेसहितसुविर ॥ यहस्त्वाघतपै ॥ ८८ ॥
जोसाकिर्णनकांतहिवकर ॥ किंनिर्जरामाजिजमवेष्वर ॥ तेसायज्ञमंडपिरसुविर ॥ क्रृषिसहितजोभता ॥ ८९ ॥

सुधिविभिषणमस्ति ॥ यज्ञमंडपानां वलेरहिति ॥ सुमंतसरथउन्निबापति ॥ सदलिष्टिराघवापशि ॥ ८० ॥ जेडेसा
 मयित्वागलिपुर्ण ॥ तेवाक्लाठहेतिबाणुन ॥ होसोहकोहवगण ॥ विमानिक्षेत्रनिपाहति ॥ ८१ ॥ ईक्षेत्रपञ्चहेत्तिक्षित
 पुर्ण ॥ जातमाहाविरञ्जुञ्ज ॥ सक्षकरजेयतिहरण ॥ करमारघविसांगोते ॥ ८२ ॥ तेचिक्षिप्तिक्षिताक्षिंजाण ॥ अषित
 आरंभिताजालायेज्ञ ॥ लेणवाक्षिक्षिक्षिवलउब ॥ वेलाहेताख्यच्छ ॥ ८३ ॥ मतावासगेलुतेकांतषि ॥ तेणेलाजाक्षेति
 लक्षणिशि ॥ बारेमाज्ञियाउपवनाग्नि ॥ रक्षोवेंदुवांविरत ॥ ८४ ॥ जेसेबोलेनिपाताक्षि ॥ वालिक्षेत्रेलातेवेक्षि ॥ कु
 शाहिदुरक्षवनिप्रवेशला ॥ क्षेत्रेंमुकेंआणावया ॥ ८५ ॥ उपवनारहिता ॥ सेवेब्रहुवाक्षेत्रेवहुत ॥ नानक्षित्तिक्षि
 नोहक्षित ॥ वृह्यधायेत्तिक्षेत्रले ॥ ८६ ॥ अष्टवर्षीरसावप्तिक्षितारा ॥ क्षट्टिक्षेत्रिपिनसुंहरा ॥ मस्तक्षित्तिक्षित्तिक्षित ॥ सुंजि
 खेक्षलांउडित्तित्तयांन्या ॥ ८७ ॥ द्योउद्यामकर्णधांवत् ॥ ज्ञालात्यात्पंथेभक्तमात ॥ अषिपुत्रास्तलेहुहवित ॥ पा
 ठारयेनद्योउक्षेसा ॥ ८८ ॥ मगशित्तासुतेधांवोन ॥ देंडित्तस्थरिठाजामकर्ण ॥ क्षपक्षित्तिचेपत्रसोङ्गुन ॥ वाम्बितजि
 लातेक्षित ॥ ८९ ॥ पत्रार्थपाहुनिस्मनस्त ॥ लहुगहगहांहांसल ॥ बक्षिवाक्षायरद्युनाध ॥ त्रिमुवनियोरजाहला ॥ ९० ॥

श्रिमद्।

१९०।

कायत्वात्रिच्चव्यालिजननि॥ कायनिवर्जलिभवनि॥ तदिकैसादोडसोडुनि॥ नेईतजातोक्तेलते॥ १९। मध्यिन्नति
 ज्ञाहेचिभालां॥ धरितादोडसोडिमायुना॥ तदिरितेचेत्तदिततता॥ जंतनास्त्रिउपजले॥ २०॥ अश्वोतमन्वेनेत्रपुसोनि॥
 क्षेत्रुकक्षेत्रनयापटमाना॥ उत्तरिचिरगवांशात्तुना॥ वंचित्वानेतनिकेठित्ति॥ २१॥ अष्टिपुत्रांसतेकांलण्ठा॥ पाठोर
 दोडोडेसानाचित्॥ अष्टिबोक्तेसमस्ता॥ पोटबडोवृत्तमेकरोने॥ २२॥ कोणारायाचादोडाजाता॥ तोनुंवाच्चवकेझीरता॥
 परिलास्तिसांगतोंतयाला॥ लहुवंवांधिलाल्लानिया॥ नहुतयान्नतिबोलता॥ जामुचिचनिष्ठयेहुवस्ता॥ जा ॥ विजय
 पुलिजापणासदेतांसत्या॥ तांकायेयेकायति॥ २३॥ गोरीसाक्षरनिया॥ यां॥ दिशालविनसक्त्वस्त्रियो॥ तों
 विरभालिद्धांवोनिया॥ अश्वरक्षकपुढेलजा॥ २४॥ तपत् नदेहरवाना॥ विरपुसलिहटाउना॥ कोणहरेशामकर्ण॥
 कहीकिशिवांधिला॥ २५॥ लेकुरेबोललिम्बितना॥ पेलाक्षिशारभाङ्गनयना॥ जानेवत्तोवाधिलाजायुना॥ स्याचे
 क्षेत्रकापाहो॥ २६॥ रामविजयग्रंथपावना॥ ल्यामजिलहुकुदाचेआरव्याना॥ कथाअमुताहुनिगोडगहना॥ मलज
 निपरिक्षमनि॥ २७॥ ब्रह्माबंहश्रीधरवर॥ जानकिहरयक्षमक्षमर॥ अगाधतयाच्चरित्र॥ स्यकिन्तरशानकोटि॥ २८॥
 रामविजयग्रंथसुंदर॥ समंतवल्लिकनाडकाधारा॥ सहापरिसोलचतुरा॥ ससविंशतिमोद्यायगोडहा॥ २९॥ द्या॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com